रेल की बेहतरी

हजारों किलोमीटर लंबी पटरियों पर दौड़ती भारतीय रेल हमारी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है. माल ढुलाई और यात्रियों के आवागमन का प्राथमिक साधन होने के साथ रोजगार उपलब्ध करानेवाली सबसे बड़ी संस्था रेल ही है. सत्ता में आते ही पीएम नरेंद्र मोदी ने इसके कायाकल्प का भरोसा दिलाया था. हालांकि ऐसे वादे पहले भी किये गये थे. रेल के विस्तार एवं विकास की दिशा में उल्लेखनीय उपलब्धियां भी हासिल हुई थीं, लेकिन यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा बेहतर करने तथा रेल नेटवर्क की व्यावसायिक संभावनाओं को वास्तविकता में बदलने की आकांक्षाएं संतोषजनक रूप से पूरी नहीं हो सकी थीं. मोदी सरकार के पहले बजट में ही तत्कालीन रेलमंत्री सदानंद गौड़ा ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश तथा निजी क्षेत्र की भागीदारी पर जोर देकर सुधार की पहलकदमी की थी. उन्होंने रेल योजनाओं के लिए 65,445 करोड़ रुपये का प्रावधान किया था, जो रेल इतिहास का सबसे बड़ा आवंटन था. 2015-16 में उस समय के विभागीय मंत्री सुरेश प्रभु ने यात्री सुविधाओं पर बजट को केंद्रित किया था. उन्होंने पांच सालों में 8.5 लाख करोड़ के निवेश की योजना भी प्रस्तुत की थी और बजट की राशि में भी 50 फीसदी की बढ़ोतरी की थी. अगले बजट में भी उन्होंने 21 फीसदी की वृद्धि की. रेल बजट की एक परंपरा बन गयी थी कि व्यापक विकास की आवश्यकताओं को किनारे रख राजनीतिक नफे-नुकसान को देखते हुए नयी यात्री रेलगाड़ियों की घोषणा की जाती थी. प्रभु ने इस परिपाटी को न सिर्फ तोड़ा, बल्कि पूरे रेल प्रणाली के आधुनिकीकरण, विद्युतीकरण और मौजूदा इंफ्रास्ट्रक्चर के रख-रखाव पर जोर दिया. खस्ताहाल पटरियों के कारण हमारे देश में ट्रेनों की गति कम है, इससे माल ढुलाई और यात्री गाड़ियां देरी से भी चलती हैं. यह समस्या अब भी है, क्योंकि इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने में समय लगता है, लेकिन मौजूदा सरकार की कोशिशों से इसमें सुधार हुआ है और अनेक तेज गति की ट्रेनें चल रही हैं. एक महत्वपूर्ण निर्णय यह हुआ कि 92 साल से चली आ रही अलग रेल बजट की परंपरा को विराम देते हुए 2017 में रेल बजट को आम बजट में समाहित कर दिया गया. उस वर्ष 2016-17 के बजट से आठ फीसदी की वृद्धि की गयी थी. तब वित्त मंत्री अरुण जेटली ने पांच सालों में रेल सुरक्षा के लिए एक लाख करोड़ रुपये का कोष बनाने की घोषणा की थी. रेल सुरक्षा पर बातें पहले भी होती थीं, पर आवंटन की कमी से अच्छे परिणाम नहीं आते थे, पर बीते चार सालों में इस दिशा में बहुत काम हुआ है और दुर्घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आयी है. पिछले आम बजट में रेल के लिए करीब डेढ़ लाख करोड़ का आवंटन सरकार की प्राथमिकता और गंभीरता को रेखांकित करता है. अब भारतीय रेल डिब्बे के 200 अरब डॉलर के वैश्विक कारोबार में शामिल होने की योजना बना रहा है. चुनावी वर्ष के कारण इस बार अंतरिम बजट पेश किया जाना है, पर उम्मीद है कि इंफ्रास्ट्रक्चर, सुविधा और सुरक्षा बढ़ाने की नीति जारी रखते हुए समुचित आवंटन किया जायेगा.

उम्मीद है कि अंतरिम बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर, सुविधा और सुरक्षा बढ़ाने की नीति जारी रखते हुए समुचित आवंटन किया जायेगा.

बोधि वृक्ष

चिंताग्रस्त हम

मनुष्य को कैसे सुखी बनाया जाये, हमारी विकास यात्रा का यही उद्देश्य है, लेकिन डर है कि बड़े-बड़े मॉल, कॉलोनियों और बड़ी-बड़ी सड़कों के नीचे कहीं मानवता दब न जाये. कहीं इस प्रगति के दौर में मनुष्य किसी खंडहर में छिप न जाये. मैं भी प्रगति के पक्ष में हूं और चाहता हूं कि हमारा भी देश, प्रांत, गांव बढ़ता रहे, लेकिन यह प्रगति केवल साधनों तक सीमित न रह जाये, क्योंकि समस्त साधन हमें सुखी बनाने के लिए उपलब्ध किये जा रहे हैं. भय है कि कहीं इन साधनों के नीचे मनुष्य दब न जाये. आजकल बड़े-बड़े शहरों में देखा जा रहा है कि 50 लाख की गाड़ी पर एक बीमार, चिंताग्रस्त व्यक्ति बैठा है, कॉलोनियों में बड़े-बड़े मकान हैं, जो संपूर्ण आधुनिक सुविधाओं से लैस हैं, लेकिन उन मकानों में जो लोग रह रहे हैं, वे बड़े अशांत हैं. वहां खड़ा संपूर्ण मानव तनाव और चिंताग्रस्त है, उस सोने के भवन सा दिखनेवाले मकान में कोई भी व्यक्ति हंसता हुआ नहीं दिख रहा है. हमारी मस्ती, हमारी किलकारी, हमारे हुड़दंगों को किसी की नजर लग गयी. किसकी नजर लग गयी, हमारी किलकारी, हमारे हुड़दंगों पर? किसने हमारी हरी-भरी बगिया में आग लगा दी? मुझे लगता है हमारा अंतर्मन राग, आकर्षण और प्रेम से रूठ गया है. हम मरुभूमि बन गये हैं. यही कारण है कि जहां जूही-चमेली की बगिया हुआ करती थी, वहां आज कंटीले वृक्ष आ गये हैं. यही कारण है कि हम इतना तनावग्रस्त, चिंताग्रस्त बनते जा रहे हैं. हमारे सारे अरमान सूख गये, प्रेम की धरा रेत में विलीन हो गयी. आज आवश्यकता है कि पहले हमारे जीवन में राग, आकर्षण और प्रेम पैदा किया जाये, ताकि आज जो हम नफरत की आग में जले जा रहे हैं, घृणा और आवेश के कारण हमारा जीवन विष वृक्ष बन गया है, पहले हमें उसी अंतर्मन की सफाई करनी चाहिए और तब उसमें स्वस्थ पौध लगाया जाना चाहिए, ताकि उसमें सुंदर फूल खिल सकें. क्योंकि जितनी भी हमारी विकास यात्राएं चल रही हैं, वे सभी मनुष्य के लिए हैं.

धौनी को कितने इम्तिहान देने होंगे

आशुतोष चतुर्वेदी
प्रधान संपादक, प्रभात खबर
ashutosh.chaturvedi
@prabhatkhabar.in

पिछले कुछ समय में किसी क्रिकेट खिलाड़ी पर इतने सवाल नहीं उठाये गये हैं, जितने महेंद्र सिंह धौनी पर. पहले भी यह बात सामने आयी है कि धौनी के खिलाफ, खास कर सोशल मीडिया पर, एक सुनियोजित अभियान चलाया जा रहा है. इसमें यह बताने की कोशिश की जा रही है कि अब वह चुक गये हैं और टीम पर बोझ बन गये हैं. उनके मुकाबले अन्य खिलाड़ियों को खड़ा करने का प्रयास भी किया गया है. साथ ही यह संदेश देने की भी कोशिश की गयी है कि उन्हें अब विदा करने का वक्त आ गया है. धौनी के खिलाफ इस तरह के अभियान समय-समय पर चलते रहे हैं, लेकिन हर बार धौनी ने अपनी बल्लेबाजी और विकिटकीपिंग, दोनों से अपने आलोचकों को करारा जवाब दिया है. वह एक बार फिर हर कसौटी पर खरे उतरे हैं. धौनी ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शानदार पारी खेल कर न केवल भारतीय टीम को संकट से बाहर निकाला, बल्कि जीत भी दिलायी है. वनडे सीरीज के तीनों मैचों में लगातार तीन अर्धशतक लगाने के कारण उन्हें सीरीज का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी करार दिया गया है. धौनी ने सीरीज के आखिरी और निर्णायक मैच में नाबाद 87 रन बनाये और टीम को जीत दिलवायी. सीरीज में यह उनका लगातार तीसरा अर्धशतक था. साथ ही उन्होंने ऑस्ट्रेलिया में एक हजार रन का रिकॉर्ड भी बनाया. धौनी से पहले ऑस्ट्रेलिया में वनडे मैचों में एक हजार रन बनाने की उपलब्धि सिर्फ तीन भारतीय बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली और रोहित शर्मा हासिल कर पाये थे. और तो और, 10 वर्ष पहले जिस औसत से धौनी रन बना रहे थे, वह अब भी लगभग उसी औसत से रन बना रहे हैं.

यह प्रसन्नता की बात है कि भारतीय कप्तान विराट कोहली धौनी के पक्ष में खुल कर सामने आये हैं. विराट ने कहा कि लोग बहुत कुछ कहते हैं, लेकिन हमें पता है कि भारतीय क्रिकेट के प्रति धौनी से ज्यादा समर्पित कोई खिलाड़ी नहीं है. लोगों को उनके प्रति सदाशयता दिखानी चाहिए, क्योंकि उन्होंने भारतीय क्रिकेट को बहुत कुछ दिया है. यह बात पहले भी सामने आयी है और आपने यदि गौर किया हो कि मैदान में आधी कप्तानी धौनी कर रहे होते हैं. वह विकेट के पीछे से गेंदबाजों को कैसी और कहां गेंद करें, इसकी लगातार हिदायत देते रहते हैं. स्पिनर के वक्त तो उनकी सक्रियता और बढ़ जाती है. वह स्पिनरों को लगातार सलाह देते नजर आते हैं. स्टंप में लगे माइक से उनकी बातें साफ सुनाई देती हैं. ऐसा नहीं है कि धौनी पहली बार स्पिनरों की मदद कर रहे हों. हालांकि सारा श्रेय गेंदबाजों को मिलता है, लेकिन हम धौनी के योगदान की अक्सर अनदेखी कर जाते हैं. यह अनुभव और विशेषता किसी अन्य विकेटकीपर में कहां मिलेगी? जब भी कोई रिव्यू लेने की बात आती है, कप्तान विराट कोहली उनके पास जाते हैं और धौनी का निर्णय अंतिम होता है. यह सही है कि वह विकेट के पीछे रहते हैं और बेहतर स्थिति में होते हैं. दुनिया के सभी विकेटकीपर इसी स्थिति में होते हैं, लेकिन धौनी रिव्यू का सटीक आकलन करते हैं. यही वजह है कि भारतीय टीम के अधिकांश रिव्यू सफल होते हैं.

धौनी के खिलाफ अभियान समय-समय पर चलते रहे हैं, लेकिन हर बार धौनी ने अपनी बल्लेबाजी और विकिटकीपिंग, दोनों से अपने आलोचकों को करारा जवाब दिया है. वह एक बार फिर हर कसौटी पर खरे उतरे हैं.

अंतिम मैच में एक दिलचस्प वाकया हुआ. आम तौर पर होता है कि टीम के खिलाड़ी जीतने के बाद स्टंप उखाड़ कर अपने साथ ले जाते हैं, लेकिन जब से एलइडी स्टंप्स का उपयोग शुरू हुआ है, तब से खिलाड़ी कम ही स्टंप्स ले जाते हैं, लेकिन 87 रन की नाबाद पारी खेल कर और सीरीज 2-1 से जिताने के बाद धौनी गेंद उठा कर ले गये. धौनी बॉल लेकर पवेलियन की ओर लौटे और उन्होंने टीम के बैटिंग कोच संजय बांगर के हाथों में वह गेंद सौंप दी. बताते हैं कि उन्होंने कहा कि बॉल ले लो, नहीं तो लोग बोलेंगे कि रिटायरमेंट ले रहा है. अधिकांश लोगों के समझ में यह बात नहीं आयी कि धौनी ने ऐसा क्यों कहा और इससे उनका आशय क्या था? दरअसल, 2018 में फॉर्म के लिए संघर्ष कर रहे धौनी इंग्लैंड दौरे पर भी इसी तरह मैच के बाद गेंद उठा कर ले आये थे. इसके बाद अटकलों का बाजार गर्म हो गया था कि वह संन्यास ले रहे हैं, लेकिन बाद में पता चला कि धौनी ने वह सफेद गेंद बॉलिंग कोच को दे दी थी. दरअसल, वह उन्हें गेंद की हालत दिखाना चाहते थे, लेकिन तब तक संन्यास की अटकलों ने जोर पकड़ लिया था और टीम के कोच रवि शास्त्री को इस अफवाह का खंडन करना पड़ा था. एक साल के बाद ऑस्ट्रेलिया दौरे पर धौनी ने बांगर के साथ चुटकी लेते हुए उस घटना की याद ताजा कर दी. साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह फिलहाल संन्यास नहीं ले रहे हैं.

भारतीय टीम के मुख्य कोच रवि शास्त्री भी धौनी के मुरीद हैं. उन्होंने कहा कि टीम में महेंद्र सिंह धौनी की जगह कोई और नहीं ले सकता है. धौनी जैसे खिलाड़ी 30-40 साल में एक बार आते हैं. जब तक वह हैं, हर भारतीय को उनके खेल का आनंद उठाना चाहिए. जब वह चले जायेंगे, तो एक बड़ा खालीपन होगा, जिसे भरना मुश्किल होगा. शास्त्री ने कहा कि विकेट के पीछे उनका योगदान शानदार रहता है. वह टीम में पूजे जाते हैं. यह पूरी टीम उनके द्वारा बनायी हुई है, क्योंकि वह पूरे 10 साल तक टीम के कप्तान रहे हैं. आंकड़े इस बात के गवाह हैं कि धौनी जैसा कोई नहीं है. धौनी के नाम एक-से-एक रिकॉर्ड दर्ज हैं. वह दुनिया के एकमात्र ऐसे कप्तान हैं, जिनके नेतृत्व में किसी टीम ने आइसीसी की तीनों ट्रॉफी जीती हैं. धौनी की कप्तानी में भारत ने 2011 का वर्ल्ड कप और 2007 का आइसीसी वर्ल्ड ट्वेंटी-20 और 2013 में आइसीसी चैंम्पियंस ट्रॉफी का खिताब जीता है. उन्होंने 335 वनडे मैच खेले हैं. इसमें उनके नाम 10366 रन दर्ज हैं और उनका औसत 50.81 है. उनके नाम 10 वनडे सेंचुरी हैं और सौ से अधिक हाफ सेंचुरी हैं. वनडे मैचों में 100 स्टंपिंग करने वाले वह दुनिया के एकमात्र विकेटकीपर हैं. उनकी तेजी और फुर्ती में कोई कमी नहीं है. पलक झपकते ही वह बल्लेबाज की गिल्लियां उड़ा देते हैं. यह बात देश और विदेश के सभी के खिलाड़ियों को पता है कि अगर धौनी के हाथ में गेंद आ गयी और प्लेयर क्रीज से जरा-सा भी बाहर है, तो बल्लेबाज किसी भी सूरत में बच नहीं सकता है. धौनी को दुनिया का बेस्ट फिनिशिर, मिस्टर कूल और मिस्टर डिपेंडेंट यूं ही नहीं कहा जाता है. उन्होंने एक बार फिर साबित किया है कि उनको जो नाम दिये गये हैं, वे उनके एकदम उपयुक्त हैं. मैं पूरी तरह आश्वस्त हूं कि 2019 में होने वाले क्रिकेट विश्व कप में वह महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे.

दुनिया की नजरों में कुंभ मेला

प्रो सतीश कुमार
सेंट्रल यूनवर्सिटी ऑफ हरियाणा
singhsatis@gmail.com

बंटे हुए माहौल में भारत की आध्यात्मिक प्रेरणा ही दुनिया को एक कड़ी में जोड़ सकती है. इस जोड़ को कारगर बनाने में कुंभ मेला का महत्व पूर्ण योगदान होगा.

साल 1895 में कुंभ मेला को देखने आये प्रसिद्ध अमेरिकी कहानीकार मार्क ट्वेन ने कहा था कि कुंभ अद्भुत संगम है. लोगों के विश्वास और भारत की एक अलग पहचान का, जिसे संभवतः गोरी चमड़ी के लोग भौतिकवादी नजरिये से नहीं समझ पायेंगे. साल 2019 का कुंभ मेला कई मायनों में भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि को एक धर्म गुरु के रूप में स्थापित करने में सार्थक होगा. इसमें आध्यात्मिकता के साथ नयी आधुनिक सोच को भी विकसित किया गया है. पचास दिनों तक आयोजित कुंभ में 3200 हेक्टेयर में 12 से 15 करोड़ लोग आकर डुबकी लगायेंगे. भारत के संदर्भ में दुनिया में कई भ्रम फैलाने की कोशिश की जाती रही है कि हिंदू अनुष्ठानों में बड़े पैमाने पर गंदगी फैली होती है. यह धर्म जातियों और कुनबों में बंटा हुआ है, यहां पर सामाजिक और लैंगिक समानता जैसी कोई सुध-बुध नहीं है, सब कुछ ऐसे ही चलता रहता है. संभवतः 2019 का कुंभ इन सारी गलतफमियों को दूर करने का प्रयास करेगा. तकरीबन 105 देशों से दो लाख से ज्यादा विदेशी श्रद्धालु इस महाकुंभ को देखने भारत आ रहे हैं. इस महान गौरवशाली परंपरा को कलमबद्ध करने की योजना भी सरकार के द्वारा बनायी गयी है. केंद्र और राज्य की सरकारें कुंभ मेला के आयोजन के माध्यम से भारत के धार्मिक धरोहर को स्थापित करने का प्रयास कर रही हैं. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुष्ठान (आइसीएसएसआर) के सदस्य सचिव प्रो वीके मल्होत्रा का मानना है कि इस अद्भुत आध्यात्मिक आयोजन का अकादमिक विश्लेषण विभिन्न मानकों पर होना आवश्यक है, दुनिया के सामने विकसित भारत की पहचान को शोध द्वारा स्थापित करना भी इस संगठन की सोच है.

प्रयागराज में आयोजित कुंभ मेला दुनियाभर के लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है. विश्व के अलग-अलग हिस्सों से लोग पहुंच रहे हैं. कुंभ मेले में साधु-संत भी बड़ी संख्या में आते हैं और वे अपनी एक अलग पहचान प्रस्तुत करते हुए आकर्षण का केंद्र भी होते हैं. भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक रीति-रिवाज को जानने-समझने का यह बेहतरीन मौका होता है. यह अवसर भारत की समृद्धशाली धार्मिक एकता का प्रतीक भी है. शंकराचार्य ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए संन्यासी संघों का गठन किया था. बाहरी आक्रमण से बचने के लिए कालांतर में संन्यासियों के सबसे बड़े संघ जूना अखाड़े में संन्यासियों के एक वर्ग को विशेष रूप से शस्त्र-अस्त्र में पारंगत करके संस्थागत रूप प्रदान कि या गया. ज्योतिषशास्त्र के अनुसार, ग्रहों का शुभाशुभ फल मनुष्य के जीवन पर पड़ता है. बृहस्पति जब विभिन्न ग्रहों के अशुभ फलों को नष्ट कर पृथ्वी पर शुभ प्रभाव का विस्ता र करने में समर्थ हो जाते हैं, तब उक्त शुभ स्थानों पर अमृतप्रद कुंभयोग अनुष्ठानित होता है. अनादि काल से इस कुंभयोग को आर्यों ने सर्वश्रेष्ठ साक्षात मुक्तिपद की संज्ञा दी है. इन कुंभयोगों में उक्त पुण्य तीर्थ स्थानों में जाकर दर्शन तथा स्नान करने पर मानव मनोभाव से पवित्र, निष्पाप और मुक्तिभागी होता है- इस बात का उल्लेख पुराणों में है. यही कारण है कि धर्मप्राण मुक्तिकामी नर-नारी कुंभयोग और कुंभ मेले के प्रति इतने उत्साहित रहते हैं.

वर्ष 2015 में योग को स्थापित कर भारत ने महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कूटनीतिक पहल करने में सफल रहा. चीन पिछले कई वर्षों से धर्म से आध्यात्मिक अंश को निचोड़कर एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश में है, जहां पर कलह के सिवा और कुछ नहीं है. कारण कि चीन की 60 फीसदी आबादी नास्तिक है और धर्म में उनका विश्वास नहीं है. इसलिए बौद्ध धर्म का महासम्मेलन आयोजित कर चीन अपने सैनिक फन को फैलाना चाहता है. शीत युद्ध के दौरान पश्चिमी शक्तियों ने भी मानव समाज के लिए अनेक मुसीबतें पैदा कीं. जातीय युद्ध और एक दूसरे से अलग की पहचान सिद्धांत को बढ़ावा दिया जाता रहा. रंग, भाषा और क्षेत्र के आधार पर समाज बंटा हुआ है. फिर सैमुएल हंटिंग्टन ने धर्म और सभ्यता के आधार पर दुनिया को बांटने का नया सिद्धांत दे डाला. ऐसे बंटे हुए माहौल में भारत की आध्यात्मिक प्रेरणा ही दुनिया को एक कड़ी में जोड़ सकती है. इस जोड़ को कारगर बनाने में इस कुंभ मेला का महत्वपूर्ण योगदान होगा. यह एक होने की प्रवृत्ति है, जहां पर हर अंतर पवित्र डुबकी के साथ छू-मंतर हो जाता है.

प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में सांस्कृतिक कूटनीति ने भारत की जकड़न को तोड़ने का सार्थक प्रयास किया है. दुनिया द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भी लहू-लुहान है. अगर 21 शताब्दी में चीन के फार्मूले की अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था बनती है, तो वह और ही कष्ट दायक होगी.

पिछले दिनों अमेरिका की पेंटागन रिपोर्ट में यह कहा गया कि चीन की 'वन बेल्ट रोड' परियोजना दुनिया को जोड़ने के बजाय तोड़ने की कोशिश करेगी, जबकि भारत की प्रेरणा दुनिया को एक आयाम में बांधने की होगी. इसलिए कुंभ के आध्यात्मिक और इससे जुड़ी हुई ब्रह्मांडीय शक्तियों का प्रचार दुनिया में आवश्यक है. भारत को धर्म गुरु बनाने का रास्ता भी यही है. महज आर्थिक और सैनिक सजावट के जरिये उस मुकाम पर नहीं पहुंचा जा सकता है. पिछले सात दशकों में हम पश्चिमी सिद्धांतों पर चल कर अपनी पहचान को धूमिल करते रहे हैं. आज अगर प्रारंभ हुआ है, तो इसका प्रचार भी जरूरी है.

आपके पत्र

एकजुटता का प्रदर्शन

19 जनवरी को कोलकाता के परेड ब्रिगेड मैदान में ममता बनर्जी के नेतृत्व में विपक्षी दलों ने बीजेपी के खिलाफ एकजुटता का प्रदर्शन कर तो दिया, परंतु क्या वाकई में विपक्ष एकजुट है? क्या वाकई में वे देश के लिए ऐसा कर रहे हैं? ऐसा लग रहा है, मानो सभी मोदी रोको अभियान में लगे हुए हैं. यह ठीक है कि चुनाव के समय विपक्ष अपना अधिकार का उपयोग कर रहा है, परंतु कोलकाता की सभा में ऐसा बिल्कुल देखने को नहीं मिला. तार्किक बातें कम और जुमलेबाजी ज्यादा दिखाई दी. कई ऐसे पार्टियां थीं, जो कल एक-दूसरे को देख नहीं पाती थीं, वे आज हाथ मिला रही हैं. हाथ मिलने के साथ-साथ दिल का मिलना भी जरूरी है, जो बिल्कुल दिखाई नहीं दे रहा. अतः स्पष्ट है कि अपने निजी फायदे के लिए पार्टियां एकजुट हो रही हैं. उनके नेतृत्व को लेकर अभी भी स्थिति अस्पष्ट है.

शुभम गुप्ता, नावागढ़, धनबाद

वोट बैंक ऑफ इंडिया !

भारत के नागरिक क्या अपनी शख्सियत को 'वोट बैंक ऑफ इंडिया' की तिजोरी में कैद कर चुके हैं? कहते हैं देश के संविधान में 130 करोड़ लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने का हक हासिल है और हम चुनिंदा लोगों के हाथों में देश की बागडोर सौंप कर बेपनाह सपनों की दुनिया बसा लेते हैं. बेशक सेवा करने की तमन्ना लिये हमारे नुमाइंदे हमारी जिम्मेदारियां बताते नहीं थकते, मगर हकीकत का एहसास तब होता है, जब फिर से चुनाव का एलान हो जाता है. हमारे मुल्क में चुनाव को त्योहारों की तरह मनाने का रिवाज है. अफसोस है कि ईमानदारी का पाठ पढ़ाते राजनेताओं की नजर में हम वोट बैंक से ज्यादा कुछ नहीं होते हैं. जाति-धर्म, अगड़े-पिछड़े और न जाने कितने तरह के वोट बैंकों में हमें बांट दिया जाता है. बेवजह इतिहास बदलने की जिद ने कुछ को सवर्ण, तो कुछ को दलित बना दिया है.

एमके मिश्रा, रातू, रांची

कश्मीरी पंडितों की घर वापसी

कश्मीर के मूल नागरिक कश्मीरी पंडितों को अपनी मिट्टी से अलग हुए 29 साल हो गये हैं. भगवान राम का वनवास भी 14 साल में खत्म हो गया था, परंतु कश्मीरी पंडितों का वनवास आज भी जारी है और वे कई राज्यों में घुट-घुट कर जीने को मजबूर हैं. वे आज भी उस दौरान के खौफ को नहीं भूले हैं, जब 1990 के शुरुआती दिनों में जिहादी अलगाववादियों द्वारा मस्जिदों की लाउडस्पीकरों से उन्हें इस्लाम कुबूल करने, कश्मीर छोड़ने या मरने का फरमान सुनाया जा रहा था. यही वह समय था, जब इन पंडितों को पलायन करना पड़ा था. तब से लेकर आज तक कितनी ही सरकारें आयीं, न जाने कितने वादे किये गये, लेकिन उनका पुनर्वासन न हो सका. इसका एक बड़ा कारण राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के अलावा इनका एक स्थापित वोट बैंक के रूप में न होना भी है. इनकी घर वापसी के लिए सरकार को विशेष पहल करनी होगी.

चंदन कुमार, देवघर

कुछ अलग

लोकतंत्र में रिजॉर्ट का महत्व

आलोक पुराणिक
वरिष्ठ व्यंग्यकार
puranika@gmail.com

चालू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'लोकतंत्र में रिजॉर्ट' विषय पर निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध यह है- लोकतंत्र में रिजॉर्ट का कितना महत्व है, यह हम देख चुके हैं. चुने हुए प्रतिनिधि , जिनसे उम्मीद होती है कि वे जनता की सेवा करते हुए दिखेंगे, वे अक्सर रिजॉर्ट में पाये जाते हैं. रिजॉर्ट का हिंदी अनुवाद है- आश्रय. यानी हम कह सकते हैं कि लोकतंत्र को अब जहां आश्रय मिलता है, उस ठिकाने का नाम रिजॉर्ट है. रिजॉर्ट फाइव स्टार भी होते हैं और सेवन स्टार भी होते हैं. लोकतंत्र सितारों में पनाह पाता है. यद्यपि जो लोकतंत्र में प्रतिनिधि चुनते हैं, वे सड़कों, अस्पतालों आदि में ठोकरें खाते पाये जाते हैं. इससे मालूम होता है कि सबके अपने-अपने लोकतंत्र हैं. किसी का रिजॉर्टात्मक लोकतंत्र है, किसी की सड़क का ठोकरात्मक लोकतंत्र है. लोकतंत्र की कई किस्में हैं, जिसकी जैसी औकात होती है, उसे वैसा मिल जाता है. रिजॉर्ट में लोकतंत्र के चुने हुए प्रतिनिधि जनहित के मसलों पर विमर्श करते होंगे, ऐसा माना जा सकता है. एक बार वे चुन लिये जाएं, फिर उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता. जैसे लोकतंत्र की तमाम किस्में होती हैं, वैसे ही रिजॉर्ट की कई किस्में हैं. कई रिजॉर्टों में कांग्रेस के प्रतिनिधि ठहरते हैं, कई में भाजपा के. कांग्रेस पुरानी पार्टी है, इसलिए वहां लोकतंत्र इतना मजबूत हो लिया है कि वहां कई नेताओं के खुद के अपने रिजॉर्ट हैं. रिजॉर्ट में लोकतंत्र की बहुत रोचक तस्वीरें पेश होती हैं. भाजपा वाले रिजॉर्ट में कुछ नेता कांग्रेस की साइड वाले भी हो सकते हैं, जो दिखते भाजपा की साइड हैं. ऐसे ही कांग्रेसवाले रिजॉर्ट में कुछ नेता भाजपा की साइड वाले भी हो सकते है, जो दिखते कांग्रेस की साइड ही हैं. कांग्रेस में भाजपा दिखती है, भाजपा में कांग्रेस दिखती है, यानी केजरीवालजी का वह बयान भी सही दिखता है कि सब मिले हुए हैं जी. हालांकि, खुद केजरीवालजी कांग्रेस समेत जाने किस-किस पार्टी से मिल जाएं, पक्का नहीं कहा जा सकता. यही तो लोकतंत्र का सौंदर्य है. विधायक चुना जाता है विधानसभा के लिए, पर बरामद होता है रिजॉर्ट में. लोकतंत्र का रिजॉर्ट से गहरा संबंध है. प्राचीनकाल में लोकतंत्र क्यों न था, क्योंकि तब रिजॉर्ट न था. लोकतंत्र के कुल पांच स्तंभ हैं- न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका, मीडिया और रिजॉर्ट. कई बार तीसरा, चौथा और पांचवा स्तंभ एक ही साथ पाया जा सकता है. इस तरह से हम कह सकते हैं कि रिजॉर्ट का जीवंत लोकतंत्र में घणा महत्व है. जैसे-जैसे लोकतंत्र का विकास होगा, विधायकगण मांग करेंगे कि लोकतंत्र का स्वरूप ग्लोबल हो और उन्हें रुकने के लिए देशी रिजॉर्ट नहीं, स्विट्जरलैंड या थाइलैंड के रिजॉर्ट की व्यवस्था हो. वह दिन भी आयेगा, जब विधायक चुने जाने के फौरन बाद स्विट्रजलैंड या थाइलैंड के किसी रिजॉर्ट में जाकर शपथ लेगा. ऐसी लोकतांत्रिक चेतना जब भारत में विकसित होगी, तब हम लोकतंत्र के उच्चतर स्तर पर पहुंच जायेंगे.

देश दुनिया से

सीरिया में बनी रहेगी फ्रांसीसी सेना : मैक्रों

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों ने कहा है कि सीरिया में मौजूदा इस्लामिक स्टेट के लड़ाकों के साथ उसकी सेना इस वर्ष भी अपनी लड़ाई जारी रखेगी. सेना प्रमुख व सैनिकों से बातचीत में मैक्रों ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय गठबंधन के साथ ही फ्रांस की सेना भी इस वर्ष लेवांत में मौजूद रहेगी. अमेरिका द्वारा सीरिया से अपनी सेना वापस बुला लेने की घोषणा के बावजूद फ्रांस अपने सामरिक लक्ष्य से पीछे नहीं हटेगा और यहां से आइएस का खात्मा करके रहेगा. सीरिया के मंजिब में एक बम हमले में मारे गये अमेरिकी सैनिकों के लिए शोक व्यक्त करते हुए मैक्रों ने कहा कि हमारी लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है, क्योंकि अब भी इस्लामिक स्टेट के आतंकी यहां मौजूद हैं. बुधवार को सीरिया के कुर्दों के नियंत्रण वाले शहर मंजिब में अमेरिकी सैनिकों पर हुए आत्मघाती हमले में 20 लोग मारे गये थे, जिनमें चार अमेरिकी थे. आइएस के खिलाफ लड़नेवाले गठबंधन सेना में शामिल होनेवाला फ्रांस पहला यूरोपीय देश था. वर्ष 2014 में इसके लड़ाकू विमानों ने इराके लड़ाके समूह बम बरसाया था और उसके एक वर्ष बाद इसने सीरिया में आइएस को लक्ष्य कि या था.

GLOBAL TIMES

कार्टून कोना

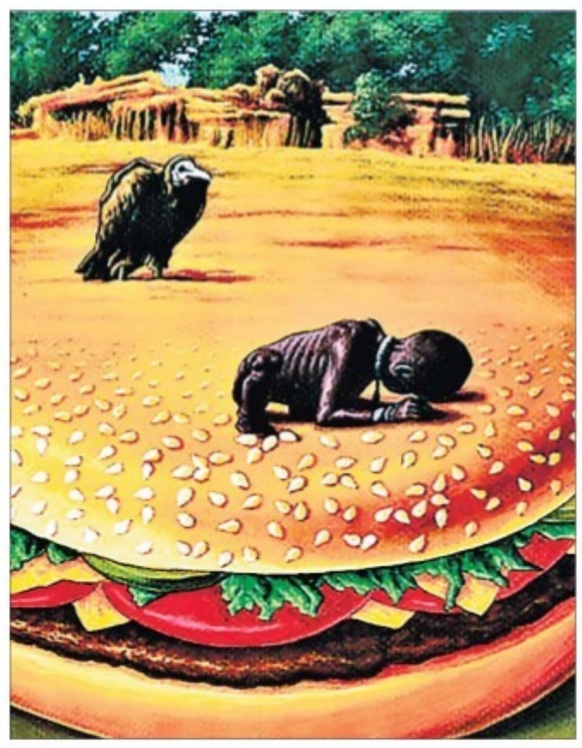

साभार : कार्टूनमूवमेंट डॉटकॉम

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001, **फैक्स करें** : 0651-2544006,
मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है